प्रेमचंद की कहानियों में पशु-प्रेम

डॉ. इशरत खान

प्रेमचंद पशु-प्रेम के चित्रण की दृष्टि से एक बेजोड़ कहानीकार हैं। 'स्वत्व रक्षा', 'अधिकार चिंता', 'पूर्व संस्कार' (१९२२), 'सैलानी बंदर' (१९२४), 'पूस की रात' (१९३०), 'दो बैलों की कथा' (१९३१) आदि कहानियों में पशु पात्रों के माध्यम से समकालीन राजनीतिक स्थिति या किसी मनोवृत्ति पर व्यंग्य किया गया है। इन कहानियों में पशु-प्रेम को प्रभावी ढंग से अंकित किया गया है। इन कहानियों को पढ़ने के बाद लगता है कि मानव, पशुवत् हो गया है और पशु में सारी मानवता आ गई है। इस संबंध में प्रो. नामवर सिंह का कहना है- "आप कहेंगे कि दलित, स्त्री और इनके साथ कोई पशु यानी ऐसे समय जिनका कोई साथी नहीं होता, मनुष्य द्वारा सताया हुआ मनुष्य।" उसे अन्ततः साहचर्य मिलता है तो कुत्ते का। प्रेमचन्द के संबंध में आप कहेंगे कि यह एक साहित्यिक डिवाइस है अथवा जीवन की एक सच्चाई है। खासतौर से दो कहानियों, 'पूस की रात' में सारी कहानी में हलकू के साथ कौन है- हल्कू अकेला लड़ता हुआ, बिना चादर का ठंड में ठिठुरता हुआ- एक आदमी। उसके साथ कोई है तो उसका कुत्ता है। किस तरह वे आग जलाते हैं, खेलते हैं, दौड़ते हैं। पूरा प्रसंग ऐसा है, प्रेमचंद ने कविता लिख दी हो। लगभग यह स्थिति 'दूध का दाम' में है। उसमें एक लड़का है मंगल, उसका जब कोई सहारा नहीं रहता तो आखिर में 'टामी' में सहारा मिलता है। एक दलित, एक स्त्री और फिर एक पशु, ये तीनों जहां होते हैं, प्रेमचंद अपनी कहानी में या किसी कथाकृति में नई जान डाल देते हैं।[१]

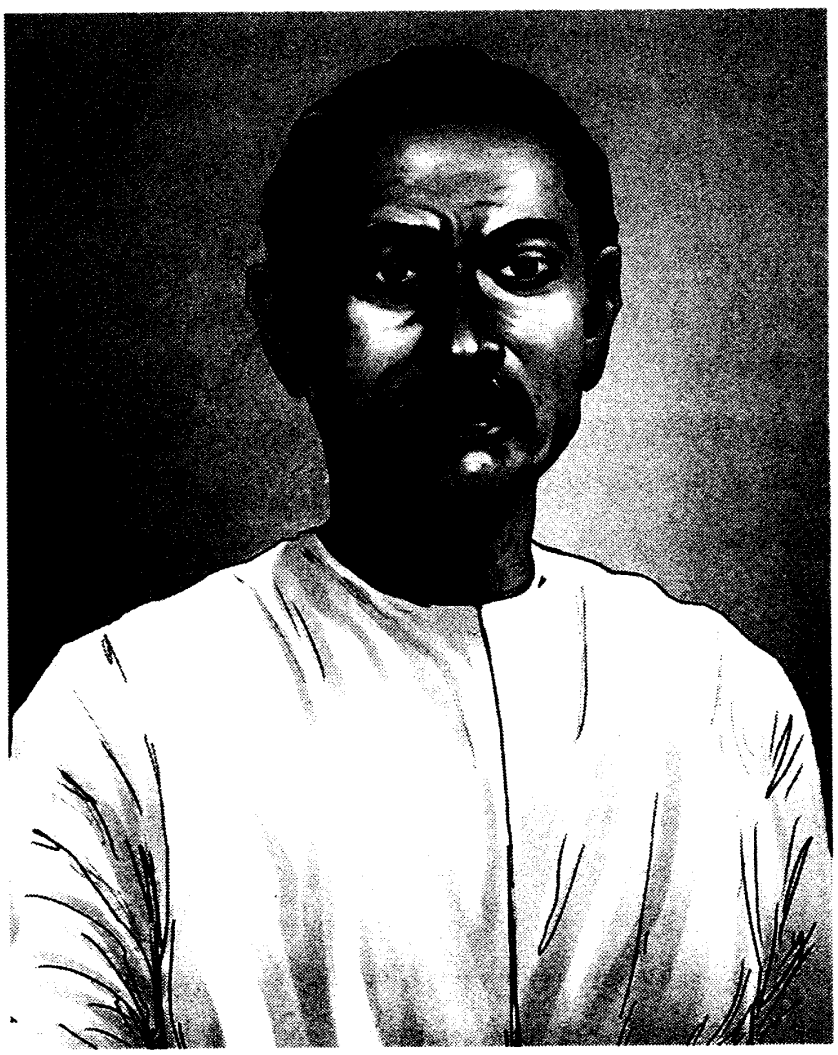

'पूस की रात' में हल्कू के साथ जबरा कुत्ते के संवेदनात्मक संबंध का अंकन तो अपने आप में एक मिसाल है। जबरा, स्वामीभक्त कुत्ता है। वह हल्कू किसान के साथ ही रहता है। जब जाड़ों की रात में हल्कू अपने खेतों की रखवाली है तो जबरा कुत्ता भी साथ रहता है। वह मालिक से अधिक अपने खेतों की देखभाल करता है। कम्बल न होने पर कड़ाके की ठंडक में जब वह खेतों में कुछ आवाज सुनता है तो वह दौड़कर खेत पर जाता है और देखता है कि नीलगाय उसके खेतों को पूरा का पूरा चर चुकी हैं। जबरा भौंक भौंककर इसकी सूचना हल्कू को देता है- 'जबरा अपना गला फाड़े डालता था, नीलगाय खेत का सफाया किए डालती थीं। और हल्कू गर्म राख के पास शांत बैठा था।'[२]

लेकिन हल्कू का सम्पूर्ण समाज व्यवस्था से मोहभंग हो चुका है। वह सोचता है कि अब इस कड़ाके की ठंड में रखवाली तो नहीं करने पड़ेगी। इस कहानी में एक बात ध्यान देने योग्य है कि कुत्ते की अपने मालिक के प्रति वफादारी। वह अपने मालिक एवं अपने खेतों से बहुत प्रेम करता है। वह नहीं चाहता है कि पूरी फसल बरबाद हो जाए और और उसके मालिक का परिश्रम व्यर्थ हो जाए। इस संदर्भ में कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं-

१. "जबरा ने उसके मुँह की ओर प्रेम से छलकती हुई आँखों से देखा।"[१]

२. "जबरा ने अगले पंजे उसकी घुटनियों पर रख दिए और उसके मुँह के पास अपना मुँह ले गया। हल्कू को उसकी गर्म साँस लगी।"[२]

३. "जब किसी तरह न रहा गया तो उसने जबरा को धीरे-से उठाया और उसके सिर को थपथपाकर उसे अपनी गोद में सुला लिया। कुत्ते की देह से जाने कैसी दुर्गंध आ रही थी, पर वह उसे अपनी गोद से चिपटाए हुए ऐसे सुख का अनुभव कर रहा था, जो इधर

जब जाड़ों की रात में हल्कू अपने खेतों की रखवाली है तो जबरा कुत्ता भी साथ रहता है। वह मालिक से अधिक अपने खेतों की देखभाल करता है। कम्बल न होने पर कड़ाके की ठंडक में जब वह खेतों में कुछ आवाज सुनता है तो वह दौड़कर खेत पर जाता है और देखता है कि नीलगाय उसके खेतों को पूरा का पूरा चर चुकी हैं। जबरा भौंक भौंककर इसकी सूचना हल्कू को देता है- 'जबरा अपना गला फाड़े डालता था, नीलगाय खेत का सफाया किए डालती थीं। और हल्कू गर्म राख के पास शांत बैठा था।

महीनों से उसे न मिला था। जबरा शायद समझ रहा था कि स्वर्ग यही है और हल्कू की पवित्र आत्मा में तो उसे कुत्ते के प्रति घृणा की गंध तक न थी। इस अनोखी मैत्री ने जैसे उसका एक-एक अणु प्रकाश से चमक रहा था।१"

'स्वत्व-रक्षा' कहानी में एक घोड़े की कहानी है उसके अन्तस् की संवेदना दिल को छू लेती है। उसमें इतना स्वाभिमान है कि वह अपने और अपने मालिक के प्रति अन्याय को सहन नहीं कर सकता है। प्रस्तुत उदाहरण द्वारा घोड़े की 'स्वत्व' का ज्ञान होता है। अंत में पराजय भाव से मुंशी जी कुंठित स्वर में बोले-

'महाशय अपना भाग्य बखानों के मीर साहब के घर के हो। यदि मैं तुम्हारा मालिक होता तो तुम्हारी हड्डी-पसली का पता न लगता। इसके साथ ही मुझे आज मालूम हुआ कि पशु भी अपनी स्वत्व की रक्षा किस प्रकार कर सकता है। मैं न जानता, तुम व्रतधारी हो। चले वे अड़ियल घोड़े, तुझे मीर साहब के हवाले कर आऊँ।' इसके अतिरिक्त इस कहानी में घोड़ा देशप्रेमी के रूप में आया है। इसके माध्यम से प्रेमचन्द घोड़े को गांधी जी के सत्याग्रह हथियार से लैस, उस भारतीय जनता के रूप प्रस्तुत करते हैं जो औपनिवेशिक शासन के अत्याचार एवं दमन के बावजूद अपने अधिकारों के प्रति सजग है।

'दूध का दाम' कहानी में 'टॉमी' कुत्ते की संवेदना देखते ही बनती है। पशु होकर भी वह आदमी-आदमी को पहचानता है।

माँ-बाप की मृत्यु के बाद 'मंगल' अनाथ हो जाता है। मालकिन उसे अपने बेटे का जूठन खाने को देती है इसी के साथ उसे डाँटती भी रहती है- यदि बेसहारा मंगल का कोई साथी है तो वह है- टॉमी कुत्ता- बस-

'बस, उसका कोई अपना था, तो गाँव का एक कुत्ता, जो अपने सहवर्गियों के ज़ुल्म से दुखी होकर मंगल की शरण में आ पड़ा था। दोनों एक ही खाना खावें, एक ही टाट पर सोते, तबीयत भी दोनों की एक-सी थी और दोनों एक-दूसरे के स्वभाव को जान गए थे। कभी आपस में झगड़ा न होता।'१

'टॉमी मंगल से बहुत प्रेम करता है- इसके संकेत, उसकी कूँ-कूँ ध्वनि, दुम हिलाना और मंगल का मुँह चाटने लगना आदि हाव-भाव से होता है।'

मंगल, टॉमी से सलाह करता है-भूख लगने पर अब क्या खाएँगे तो टॉमी कहता है- हम तो लोगों द्वारा दुत्कारने के लिए ही बने हैं- 'टामी ने कूँ-कूँ करके शायद कहा- इस तरह का अपमान तो जिन्दगी-भर सहना है। यों हिम्मत हारोगे, तो कैसे काम चलेगा? मुझे देखो न, कभी किसी ने डंडा मारा, चिल्ला उठा, फिर ज़रा देर बाद दुम हिलाता हुआ उसके पास जा पहुँचा। हम- तुम दोनों इसीलिए बने हैं भाई।'१

मंगल उससे, अकेले हवेली जाने की कहता है- लेकिन टॉमी को वफादारी देखिए- वह साथ चलना ही पसंद करता है। इस तरह दोनों महेशनाथ की हवेली में पहुँच जाते हैं और जूठे भोजन की प्रतीक्षा करने लगते हैं। कहार से पत्तल मंगल के हाथों में दिया। दोनों नीम के पेड़ के नीचे पत्तल में खाने लगे।

मंगल, टॉमी का सिर सहलाकर कहता है- 'देखा, पेट की आग ऐसी होती है। यह लात की मारी हुई रोटियाँ भी न मिलतीं, तो क्या करते?'२

इस प्रकार पशुओं में इतनी इन्सानियत आ गई है कि वह मानव के कर्मों को पहचान लेता है। उसकी जाँच-पड़ताल की क्षमता भी उसमें है। इस तथ्य को 'दूध के दाम' टॉमी कुत्ते के माध्यम से प्रेमचन्द ने उजागर किया है।

'दो बैलों की कथा' के केंद्र में दो बैल हैं। इन्हीं के इर्द-गिर्द कहानी बुनी गई है। जानवर भी प्रेम की भाषा समझता है। जब झूरी का साला 'गया' बैलों पर अत्याचार करता है वे इसको बर्दाश्त नहीं कर पाते हैं-

कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं-

१. दोनों ने अपनी मूक-भाषा में सलाह की, एक दूसरे को कनखियों से देखा और लेट गए। जब गाँव में सोता पड़ गया, तो दोनों ने ज़ोर मारकर पगहे तुड़ा डाले और घर की तरफ चले। पगहे बहुत मज़बूत थे। अनुमान नहीं हो सकता था कि कोई बैल उन्हें तोड़

सकेगा, पर इन दोनों में इस समय दूनी शक्ति आ गई थी। एक-एक झटके से रस्सियां टूट गई।१

२. झूरी द्वार पर बैठा धूप खा रहा था। बैलों को देखते ही दौड़ा और उन्हें बारी-बारी से गले लगाने लगा। मित्रों की आँखों से आनंद के आँसू बहने लगे। एक झूरी का हाथ चाट रहा था।२

३. झूरी बैलों को देखकर स्नेह से गदगद हो गया। दौड़कर उन्हें गले लगा लिया। प्रेमलिंगन और चुंबन का वह दृश्य बड़ा ही मनोहर था।३

प्रस्तुत कहानी में हीरा बैल नरम व्यक्तित्व का है तो दूसरा मोती बैल गरम व्यक्तित्व का है। मोती जब-जब विद्रोह करता है.... तभी हीरा बैल उसे समझाता है– इस संदर्भ में एक उदाहरण दृष्टव्य है–

'मोती बोला- कहो तो दिखा हूँ कुछ मज़ा मैं भी। लाठी लेकर आ रहा है।'

हीरा ने समझाया– नहीं भाई। खड़े हो जाओ।

'मुझे मारेगा तो मैं भी एक दो को गिरा दूँगा।'

'नहीं। हमारी जाति का यह धर्म नहीं है।' अंत में दोनों बैल संघर्ष करते हुए आपसी सूझ-बूझ और समझदारी से अपने मालिक झूरी के पास पहुँच जाते हैं। एक उदाहरण प्रस्तुत है- 'ज़रा देर में नाँदो में खली, भूसा, चोकर और दाना भर दिया गया और दोनों मित्र खाने लगे। झूरी खड़ा दोनों को सहला रहा था और बीसों लड़के तमाशा देख रहे थे। उसी समय मालकिन ने आकर दोनों के माथे चूम लिए।'२

मवेशी खाने से दढ़ियल बैलों की नीलामी करवाकर चलता है तो मोती विद्रोही-भाव से उससे टक्कर लेता है और आज़ाद हो जाता है। इस संदर्भ में हीरा-मोती का एक सम्वाद उल्लेखनीय है.... जब दढ़ियल हारकर चला गया, तो मोती अकड़ता हुआ लौटा।

हीरा ने कहा– मैं डर रहा था कि कहीं तुम गुस्से में आकर मार न बैठो।

'अगर वह मुझे पकड़ता, तो मैं बे-मारे न छोड़ता।'

'अब न आएगा।'

'आएगा तो दूर ही से खबर लूँगा। देखूँ, कैसे ले जाता है।'

'जो गोली मरवा दे।'

'मर जाऊँगा, पर उसके काम तो न आऊँगा।'

'हमारी जान को कोई जान ही नहीं समझता।'

'इसीलिए कि हम इतने सीधे हैं।'१

'आत्माराम' कहानी में महादेव का भरापूरा परिवार था। लेकिन उसका पारिवारिक जीवन सुखमय न था। उसके सुख-दुख का साथी आत्माराम तोता है। आत्माराम के संबंध में गाँव में अनेक किंवदंतियां प्रचलित थीं जो इस प्रकार हैं। 'कोई कहता है, वह रत्नजटित पिंजड़ा

माँ-बाप की मृत्यु के बाद 'मंगल' अनाथ हो जाता है। मालकिन उसे अपने बेटे का जूठन खाने को देती है इसी के साथ उसे डाँटती भी रहती है- यदि बेसहारा मंगल का कोई साथी है तो वह है– टॉमी कुत्ता।

स्वर्ग को चला गया, कोई कहता, वह 'सत्तगुरुदत्त' कहता हुआ, अंतर्ध्यान हो गया, पर यथार्थ यह है कि उस पक्षी रूपी चंद्र को किसी बिल्लीरूपी राहु ने ग्रस लिया।२'

'पूर्व-संस्कार' में 'जवाहिर बछड़े' की कहानी है। वह अपने मालिक का वफादार था। एक उदाहरण देखिए–

'पर कौतुहल की बात यह थी कि जवाहिर को कोई गाड़ीवान हाँकता तो वह आगे पैर न उठाता। गर्दन हिलहिलाकर कर रह जाता। मगर जब रामटहल आप पगहा हाथ में ले लेते और एक बार चुमकार कर कहते- चलो बेटा, तो जवाहिर उन्मत्त होकर गाड़ी को ले उड़ता। दो-दो कोस तक बिना रुके, साँस में दौड़ता चला जाता। घोड़े भी उसका मुक़ाबला न कर सकते।'१

प्रस्तुत कहानी में पशु और मनुष्य के बीच पिता-पुत्र के प्रेम को दिखाया गया है। इस संदर्भ में एक उदाहरण प्रस्तुत है –

"जब वह (रामटहल) शाम और सुबह को अपनी खाट पर बैठकर असामियों से बातचीत करने लगते, तो जवाहिर उनके पास खड़ा होकर उनके हाथ-पाँव को चाटता था। वह प्यार से उसकी पीठ पर हाथ फेरने लगते, तो उसकी पूँछ खड़ी हो जाती और आँखें हृदय उल्लास चमकने लगतीं। वह उसे बहुधा गोद में चिपटा लिया करते। उसके लिए चाँदी का हार, रेशमी फूल, चाँदी की झाँझें बनवायीं। एक आदमी उसे नित्य नहलाता और झाड़ता-पोंछता रहता था। जब कभी वह किसी काम से दूसरे गाँव में चले जाते तो उन्हें घोड़े पर आते देखकर जवाहिर कुलेलें मारता हुआ उनके पास पहुँच जाता और उनके पैरों को चाटने लगता।"२

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि उपर्युक्त कहानियाँ पशु-प्रेम एवं संवेदना से परिपूर्ण रही हैं। पशु संवेदना के चित्रण में प्रेमचन्द पूर्णतया सफल हुए हैं।

●

पता - हिन्दी विभाग, गोवा विश्वविद्यालय, गोवा

●

१. प्रो. नामवर सिंह : प्रेमचन्द और भारतीय समाज पृ. ९४
२. प्रेमचन्द : प्रतिनिधि कहानियाँ पृ. ४७